बिहार में जात-पात से ऊपर उठकर विकास पर मतदान

दिलीप झा

बिहार चुनाव के चमत्कारिक परिणाम पूरे देश में यह संदेश देने में सफल है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीति देश हित में सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि इसमें सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का समावेश है। बिहार की जनता ने 35 साल बाद अपने मत से यह स्पष्ट कर दिया कि वे अव जात पात से ऊपर उठकर विकास की राह पर राज्य और देश को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं. हालांकि नीतीश कुमार ने पिछले 15 साल में कई बार लालू प्रसाद यादव की पार्टी राजद के साथ भी सरकार चलाने की कोशिश की लेकिन हर बार उन्होंने असहज महसूस किया क्योंकि उन्हें विकास कार्यों को गति देने से रोका गया एवं राजद के भ्रष्टाचारी और आपराधिक तंत्र ने उनपर व्यापक दबाव बनाया. वर्ष 2024 में नीतीश कुमार ने बीजेपी के साथ हाथ मिलाया और फिर से एनडीए की डबल इंजन सरकार विकास की राह पर सरपट दौड़ पड़ी तो लोगों को यह बात भलीभांति समझ में आ गई कि उनके सपनों का बिहार अब मोदी के नेतृत्व में ही साकार हो सकता है. मोदी की चुनाव लड़ने की नीति विपक्षी नेताओं के लिए शोध का विषय होना चाहिए

चुनाव परिणाम पूरे देश के लिए संदेश...

क्योंकि महागठबंधन की तरह एनडीए में भी सीटों के बंटवारे को लेकर खटपट थी लेकिन वर्तमान राजनीति के चाणक्य अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बिहार में विराट जीत की पृष्ठभूमि दो साल पहले से ही तैयार हो रही थी. अपने गठबंधन साथियों को सम्मान देकर महागठबंधन को कैसे पटकनी देने हैं, इसकी पटकथा भी अनूठी थी. इस प्रचंड जीत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका को भी बड़ा फैक्टर माना जाता है. संघ ने अपने मानवतावादी भावनाओं से शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में हजारों बैठकें कर बिहार की जनता के दिलों दिमाग में यह भर दिया कि नीतीश और मोदी की डबल इंजन सरकार आपके बच्चों का भविष्य है? . चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने व्यस्तम कार्यक्रम के बाद भी बिहार के 14 जिलों में रैली की और पटना में रोड शो के माध्यम से लोगों को यह भरोसा दिलाया कि बिहार ने विकास की रफ्तार पकड़ ली है, अब इसे आप अपने जनमत से गति देने का काम करेंगे. दरअसल बीजेपी और जदयू ने 15 वर्ष लालू राबड़ी के जंगलराज की याद दिलाकर लोगों को आगाह किया कि आप सुशासन चाहते हैं तो एनडीए को वोट करें. बिहार में दशको बाद एनडीए ने लोगों से वादा किया कि बिहार में उद्योगपतियों से हम निवेश कराएंगे और यहां के युवाओं का भविष्य हम संवारने के लिए प्रतिबद्ध हैं और यह भरोसा कामयाबी में तब्दील हो गया और एनडीए को एतिहासिक जीत हासिल हुआ. यूं तो 2010 से 2025 तक के चुनाव में सभी दलों की महिलाओं को बड़ी जीत मिली है. लेकिन 2010 के बाद एनडीए को बड़ी जीत महिलाओं की वजह से मिली है. उन्होंने 38.2त्न की दर से जबरदस्त जीत दर्ज की है और यह जीत महिलाओं की भागीदारी के लिए मिसाल बनी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में महिला सुरक्षा, चुनाव कार्यों में महिला भागीदारी की नीति ने जनता का पूरा ध्यान खींचा.महिला लाभ के लिए बोनस की नीति में तीन गुना वृद्धि की. इससे महिलाओं को राहत मिली और 11 लाख महिलाओं को सीधा लाभ पहुंचा. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि महिलाओं ने 45 साल बाद इतनी अधिक संख्या में मतदान किया और यह एनडीए की जीत में महत्वपूर्ण कारक माना जा रहा है तो इसे सुनामी ही कहा जाएगा. देश में पहली बार बिहार की महिलाओं ने पुरुषों की तुलना मे बड़ी ज्यादा मात्रा में मतदान किया है. इससे स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर महिलाओं का भरोसा लगातार बढ़ा है.

नारी शक्ति की सबसे बड़ी जीत

बिहार में महिलाओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार की नीतियों का समर्थन किया. इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि नीतीश कुमार की 'महिला सशक्तिकरण नीति' से बड़ी संख्या में महिलाओं को लाभ मिला है. एनडीए की जीत में मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना का बड़ा रोल है. क्योंकि आज भी बिहार में 34.6 फीसदी परिवारों की मासिक आय मात्र 6000 है. ऐसे में अगर जीविका से जुड़ी 1.21 करोड़ महिलाओं को 10-10 हजार दिए गये तो जाहिर है इसका लाभ पार्टी को मिलेगा ही. इसके अतिरिक्त बिहार में लड़कियों को लाभ देने वाली योजना अनेकों चलाई जा रही हैं. इससे महिलाओं को सशक्त बनाने का काम किया है. वहीं, इस चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी ने महिलाओं का भरोसा जीत लिया है. इसके अलावा एनडीए दूध और चीनी की तरह गठबंधन था जबकि दूसरी ओर महागठबंधन में पानी और तेल जैसा गठबंधन था. दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी ने बताया कि जिस दिन राजद नेता तेजस्वी यादव ने शहाबुद्दीन अमर रहे का नारा दिया उसी दिन समझ में आ गया कि था वे जंगलराज की पुनरावृत्ति को दोहरा रहे थे और इसलिए उनका सुपड़ा साफ हो जाएगा. क्योंकि बिहार की जनता अब जागरूक हो गई है. वे गुंडागर्दी वाली शासन व्यवस्था नहीं चाहते थे. उन्होंने यह भी बताया कि जिस दिन राहुल गांधी ने महापर्व छठी मां की पूजा को ड्रामा बताया उसी दिन यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस की सीटें 19 से काफी कम हो जाएगी. वहीं कांग्रेस के बारे में कांग्रेस के सूत्र बताते हैं कि अगर लालू की राजद से अलग होकर लड़ती उसकी सीटें और बढ़ती लेकिन पता नहीं ऐसा क्यों नहीं हुआ यह समझ से परे है. क्योंकि कांग्रेस को राजद ने हमेशा पिछलग्गू पार्टी बनाकर रखा है. लालू ने पुत्र मोह में बड़ी चतुराई से कांग्रेस के युवा नेता कन्हैया कुमार को बिहार चुनाव प्रचार से दूर कर अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी थी. सूत्र बताते हैं कि कांग्रेस एक ग़लती के बाद दूसरी क्यों कर रही है यह किसी को समझ नहीं आ रहा है.

भारत में कोई भी अहिंदू नहीं

सनातन धर्म की प्रगति ही राष्ट्र की प्रगति

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस वर्ष 2 अक्टूबर को अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए . इस गौरवशाली उपलब्धि के उपलक्ष्य में संघ के द्वारा देश भर में व्याख्यान मालाएं, संवाद कार्यक्रम सहित भव्य आयोजनों का सिलसिला प्रारंभ हो चुका है जिसकी एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में विगत दिनों बेंगलुरु में एक अनूठा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया इस दो दिवसीय कार्यक्रम के पहले संघ प्रमुख ने संघ की 100 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा पर अपना विद्वत्ता पूर्ण विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया और दूसरे दिन अतिथियों की जिज्ञासाओं का सारगर्भित समाधान किया. इस कार्यक्रम में लगभग समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लगभग 1200 विशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित किया गया था. कार्यक्रम के मंच पर सरसंघचालक मोहन भागवत के साथ संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले भी आसीन थे.

संघ प्रमुख ने अपने व्याख्यान में इस बार को विशेष रूप से रेखांकित किया कि भारत में कोई भी अहिंदू नहीं है. सभी मुसलमान और ईसाई एक ही पूर्वजों के वंशज हैं. इस बात को शायद उन्होंने भुला दिया या उन्हें यह भूलने के लिए मजबूर किया गया. भागवत ने हिन्दूओं को ही भारत के लिए जिम्मेदार बताते हुए कहा कि संघ का उद्देश्य सत्ता में समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं है. उसका उद्देश्य राष्ट्र के गौरव के संरक्षण के लिए हिंदू समाज को समाज को संगठित करना है. देश की मूल संस्कृति हिन्दू संस्कृति है. संघ प्रमुख ने कहा कि जब यह प्रश्न उठाया जाता है कि संघ केवल हिन्दू समाज के लिए ही क्यों कार्य करता है तो इसका उत्तर यह है कि हिंदू ही इस देश के लिए जिम्मेदार है. अंग्रेजों ने हमें राष्ट्रीयता नहीं दी. हम एक प्राचीन राष्ट्र हैं. दुनिया में हर जगह लोग इस बात पर सहमत हैं कि हर राष्ट्र की अपनी एक मूल संस्कृति होती है. भारत की मूल संस्कृति क्या है. हम जो भी वर्णन करें वह हमें हिंदू शब्द पर ले जाता है. वही हमारी मूल संस्कृति है. भागवत ने कहा कि जानबूझकर या भले ही अनजाने में हर कोई भारतीय संस्कृति का पालन करता है. इसलिए यहां कोई अहिंदू नहीं है और हर हिन्दू को यह समझना चाहिए कि वह हिंदू है क्योंकि हिन्दू होने का मतलब भारत के लिए जिम्मेदार होना है. संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया कि सनातन धर्म ही हिन्दू राष्ट्र है और सनातन धर्म की प्रगति ही राष्ट्र की प्रगति है.

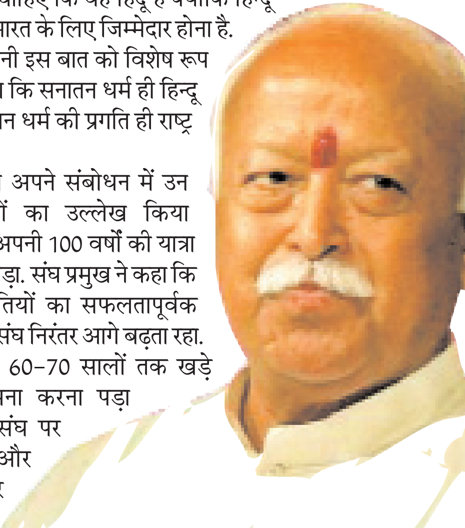

संघ प्रमुख ने अपने संबोधन में उन कठिन चुनौतियों का उल्लेख किया जिनका संघ को अपनी 100 वर्षों की यात्रा में सामना करना पड़ा. संघ प्रमुख ने कहा कि इन कठिन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए संघ निरंतर आगे बढ़ता रहा. संघ को लगभग 60-70 सालों तक खड़े विरोध का सामना करना पड़ा जिनमें दो बार संघ पर प्रतिबंध और स्वयंसेवकों पर हिंसक हमले भी शामिल हैं.तीसरी बार भी प्रतिबंध लगा परंतु वह ख़ास नहीं था. हमारी बहुत आलोचना भी हुई. संघ की राह को अवरूद्ध करने के बहुत प्रयास किए गए लेकिन संघ के जो स्वयंसेवक अपना सब कुछ संघ को देते हैं और बदल में कुछ नहीं चाहते उनके समर्पण की ताकत से हमने सभी चुनौतियों को परास्त किया और अब हम इस स्थिति में पहुंच गए हैं कि हमारी विश्वसनीयता बन चुकी है. संघ प्रमुख ने संघ अपने कार्यों को हर गांव ,समाज के हर तबके सभी जातियों और वर्गों तक पहुंचाना चाहता है. संघ प्रमुख ने साफ साफ कहा कि संघ किसी दूसरे संगठन के खिलाफ खड़ा किया गया संगठन नहीं है. एक सामाजिक संगठन के रूप में व्यक्ति निर्माण से निर्माण ही संघ का उद्देश्य है. लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 100 वर्ष पूर्व संघ ने जन्म लिया संघ प्रमुख ने इस अनूठे संवाद कार्यक्रम के दूसरे दिन सभागार में उपस्थित अतिथियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया. संघ में प्नवेश की पात्रता के संबंध में पूछे गए एक सवाल के जवाब में मोहन भागवत ने कहा कि किसी भी ब्राह्मण को संघ में प्रवेश की अनुमति नहीं है. किसी भी अन्य जाति के व्यक्ति को संघ में प्रवेश की अनुमति नहीं है. किसी भी मुसलमान को संघ में प्रवेश की अनुमति नहीं है किसी भी ईसाई को संघ में प्रवेश की अनुमति नहीं है. संघ में केवल हिंदुओं को प्रवेश की अनुमति है इसलिए किसी भी संप्रदाय के लोग चाहे वे मुसलमान हों ,ईसाई हों या किसी अन्य संप्रदाय के हों ,संघ में आ सकते हैं लेकिन उन्हें अपनी विशिष्टता (धार्मिक पहचान) बाहर रखकर ही संघ में प्रवेश की अनुमति है.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक हैं)

व्यंग्य

बाबू भाई का विरह सुख ...

रवि उपाध्याय
(लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

प्रत्येक आदमी के जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिनका होना भी बहुत ही जरूरी होती हैं. इनके बिना सदियों से जीवन अधूरा ही माना जाता है. यह वह घटनाएं होती हैं जो जीवन चक्र को गति देने के लिए अपरिहार्य होती हैं. इनमें एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना होती है जिससे व्यक्ति को बहुत खुशी मिलती है और वह घटना है विवाह. जब किसी युवा का विवाह होता है तो वह खुशी से हवा में ऐसा तैरता हुआ महसूस करता है. इसकी तुलना उन अंतरिक्ष यात्रियों से कर सकते हैं जैसे हम अंतरिक्ष यात्री को अंतरिक्ष यान में उड़ते हुए देखते हैं. वह दिन में ही सुनहरे सपने देखने लगता है . उसे हवा में चंदन की सुरभि तैरती सी लगती है. ऐसे समय में उस की मन:स्थिति, फिल्म गीत गाता चल के गाने के गाने - मैं वही,दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया नया, जैसी हो जाती है. पतझड़ में भी उसे बहार लगती है. उसका मन मयूर ठुमक ठुमक कर जब तब नाच उठता है. विवाह के बारे में एक कहावत है कि वो ऐसा लड्डू है जो खाए वो भी पछताए और जो ना खाए वो भी पछताए.

जब विवाह को पांच -सात साल हो जाएं तो फिर स्थिति शीर्षासन करने लगातीं है. ऐसे समय में स्वाभाविक स्थितियों में व्यस्त हो जाता है. वह व्यस्तताओं को खुशी खुशी ओढ़ता चला जाता है और उसे लगता है कि यह ब्रह्मांड उसी के कांधों पर टीका हुआ है और वह इस दुनिया का एक मात्र एटलस है जिसने ग्लोब को धारण कर रखा है.

शादी के बाद व्यक्ति को जो खुशियां मिलतीं हैं उनमें सबसे बड़ी वह खुशी होती है जब सालों बाद मिसिस का पति देव को छोड़ कर मायके सहित किसी अन्य जगह जाना होता है. ऐसे समय में पति को जो परमानंद की अनुभूति होती होती है. वह शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल होता है. उसके इस आनंद की अनुभूति को इस भजन की चंद लाइनों से व्यक्त किया जा सकता है. इस भजन के बोल हैं सूरज से तपते तन को मिल जाए जैसे तरुवर की छाया, ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है मैं जब से शरण तेरी आया, मेरे राम. उसके इस आनंद को कुछ इसी तरह के परमानंद की अनुभूति इन दिनों हमारे मित्र बाबू भाई महसूस कर रहे हैं . वे हाल ही में हमारी भाभी जी को हवाई जहाज से उनके गंतव्य तक छोड़ने गए थे. दिल इस खुशी के बदले बार बार हाई जंप कर रहा था. वे बैठे तो विमान थे लेकिन उनका मन विमान की गति से भी तेज गति उड़ा जा रहा था. वो गंतव्य तक मिसिस को पहुंच कर लौटे तो वे बार बार पीछे पलट पलट कर देख रहे थे कि कहीं भाभी जी लौट कर तो नहीं आ रही हैं. घर लौट कर आने के बाद बाबू भाई ने राहत की गहरी सांस ली.

आज बाबू भाई को बैचलर लाइफ़ जीते हुए महीना भर होने को आ रहा है. वे बड़े खुश हैं. सुबह और शाम बादाम और काजू का नाश्ता हो रहा है. बादाम का दूध पीया जा रहा है. रात को गहरी नींद आ रही है. भाई बताते हैं कि वे पहले सुबह 11 बजे सो कर जागते थे. अब वे रात को बिना किसी टोका टाकी के गहरी नींद लेते हैं. अल सुबह 6 बजे उठ कर गृहस्थ धर्म का पालन करते हैं. वे बिना किसी रोक टोक के जहां जाना होता है जाते हैं. जो खाना होता है खाते हैं. उन्हें ऐसा लग रहा है कि यदि स्वर्ग कहीं है तो यहीं है. हमीं अस्तो हमीं अस्तो . हमने पूछा बाबू भैया और क्या करते हैं . वे बड़ी शान से इतराते हुए बोले - खाते हैं पीते हैं, ऐश करते हैं और क्य? बाबू भैया अपनी दिन चर्या बताते हुए बोले दोपहर बाद शाम 4 बजे ओट्स या दलिया खाते हैं. उन्होंने ने बताया कि वे इन दिनों बहुत नई स्फूर्ति का अनुभव कर रहे हैं. हमने कहा बाबू भैया आपके गाल भी लाल हो गए हैं. वे बोले सेहत बना रहे हैं. गिजा खा रहे हैं. बाबू भैया बोले हर शादी शुदा से दिल की बात पूछो कि वे क्या चाहते हैं तो धीरे से कहेगा आज़ादी. हमने पूछा किस से आजादी? वे आंखें तरेर कर बोले तुम जैसे बुड़बक से, नासमझ कहीं के.

उन्होंने बताया कि वे गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए मोबाइल से दिन में दो बार भाभी जी को दिलासा देते हैं कि मेरी चिंता कतई न करें. आप अपने कर्तव्य को निभाए में यहां ठीक हूं. तुम्हारे यह त्याग कर रहा हूं. आप आराम से आएं, कोई जल्दी नहीं है. फोन पर बात करते समय बाबू भाई परिपक्वता और पूर्ण जिम्मेदारी से भाभी जी से बात करते हैं ताकि वे अपना हौंसला बनाए रखें. ऐसा न हो कि वे सुबह वाली गाड़ी से आ धमके. दोस्तों इन स्वर्णिम काल के आनंद को वही व्यक्ति महसूस कर सकता है जो इस तरह के स्वर्णिम काल का रसास्वादन किया हो. बंदर क्या जाने अंदर का स्वाद. बाबू भैया जिस दौर से गुज़र रहे हैं इस दौर से कई महा पुरुष गुजरे हैं. इस स्वर्णिम काल की तलाश सभी को रहती है. भले वे कहें या नहीं पर दिल तो यही चाहता है. इस स्वर्णिम काल को नेहरू जी ने भी जिया है. राष्ट्रपिता ने अफ्रीका में जिआ है. संत तुलसी दास ने और उनके आराध्य रामजी, लक्ष्मण और महादेव ने भी जिआ है. योगी राज ने भी इसे जिआ है. सिद्धार्थ इसे जी कर गौतम बुद्ध बन गए. तो हमारे बाबू भाई का यह त्याग अमन की खोज में बड़ा प्रयास है. परंतु इस की परिणिति अन्तत: पुन: मूषक भव: जैसी ही होनी है. तो बंधुओं यही वैवाहिक जीवन का सार है. शादी का लड्डू खाने के बाद सभी विवाहितों की आत्मा शांति की तलाश में भटकती ही रहती है और उसे शांति की प्राप्ति वहीं मिलती है जहां से हम चले थे. कितना ही खुश हो जाएं बंधना इसी खूंटे से. वो आत्मा आप का पीछा नहीं छोड़ने वाली.

मोदी का कोई तोड़ नहीं : बिहार जीत के मायने अनेक

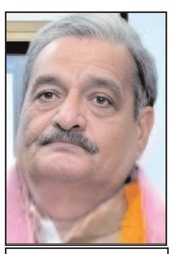

पारस नाथ राय
वरिष्ठ अधिवक्ता
वाराणसी

बिहार ने इस बार केवल सरकार नहीं चुनी, उसने अपना भविष्य चुना, अपनी दिशा चुनी, अपनी पीढ़ियों का भाग्य चुना. बिहार विधान सभा चुनाव का ऐतिहासिक परिणाम सिर्फ भाजपा-एनडीए गठबंधन की विजय नहीं, बल्कि बिहार की सामूहिक चेतना का पुनर्जन्म है. यह वह क्षण है जब इतिहास ने करवट ली है और जनता ने स्पष्ट शब्दों में कहा है 'हम अतीत के अंधकार में लौटने वाले नहीं, हम जनराज के उजाले में आगे बढ़ने वाले बिहार हैं.

प्रतीकों, मूल्यों, संस्कृति और परंपराओं की पिच पर आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नहीं हरा पाएंगे. ये मोदी और बीजेपी की पसंदीदा पिच है. अगर इस पर विपक्ष फंसा तो उसकी करारी हार सुनिश्चित है विपक्ष हर बार यही ग़लती करता है. वो भारतीय मानस को समझे बिना मोदी को ललकारता है. हिंदू संस्कृति के मानबिंदुओं, परंपराओं और आस्था पर कटाक्ष करता है. अपमानित करता है. विपक्ष को लगता है कि वो हिंदुत्व को गाली देकर जीत सकता है. विपक्ष को लगता है कि वो भारतीय सेना के शौर्य को चुनौती देकर चुनाव जीत सकता है. विपक्ष को ये लगता है कि जाति के नाम पर विभाजन उत्पन्न कर जीत सकता है. अगर इस मुगालते में विपक्ष है तो वो मोदी से कभी नहीं जीत सकता है. क्योंकि कौन से प्रतीकों को कहां और किस अंदाज़ में आज़माना है. ये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बख़ूबी जानते हैं. यूं कहूं तो वो इसमें सिद्धहस्त हैं. इसके जादूगर हैं.

हरियाणा, महाराष्ट्र के बाद बिहार विधानसभा के ये परिणाम बता रहे हैं कि — आप हिंदू संस्कृति का अपमान कर कोई भी चुनावी किला फतह नहीं कर सकते. आप सांविधानिक संस्थाओं का अपमान कर चुनाव नहीं जीत सकते. विपक्ष को ये समझना होगा कि जिस त्नद्गठ्ठ-ं के नाम पर देश में नेपाल जैसी अराजकता का बिगुल फूंका जा रहा था . भारत के त्नद्गठ्ठ-ं ने उसकी हवा निकाल दी है. उसने भर-भर के एकमुश्त वोट एनडीए की झोली में डालकर राजतिलक कर दिया है. महिलाओं ने बड़ी ख़ामोशी से प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर अपना विश्वास जताया है.

क्या देश की जनता को ये नहीं दिखता रहा है कि - कैसे समूचा विपक्ष संसद की कार्यवाही नहीं चलने दे रहा था. क्या देश की जनता ये नहीं देख रही थी कि- कैसे राहुल गांधी के नेतृत्व वाला इंडी गठबंधन अराजकता का वातावरण बना रहा था. राष्ट्रीय हित के मुद्दों में इंडी गठबंधन के दलों का गतिरोध, तुष्टिकरण क्या देश की जनता नहीं देख रही थी?

विपक्षी दलों को क्या लगता कि केवल आचार संहिता लगते ही चुनावी जंग जीती जाती है? अगर ये सोचते हैं तो इससे बड़ी भूल भला क्या हो सकती है? जनता हर समय राजनीतिक दलों, उनके नेताओं के आचरणों को देखती है. परखती है. उसके बाद धैर्यपूर्वक ढंग से आंकलन करती है. तत्पश्चात अपना निर्णय सुनाती है.

जीत के ये आंकड़े बता रहे हैं कि —देश की जनता जान चुकी है कि विपक्ष ऐनकेन प्रकारेण केवल सत्ता हासिल करना चाहते हैं. उनकी नीयत में खोट है. क्योंकि क्षेत्रीय दलों को निगल जाने के बाद केवल 99 सीटें लोकसभा चुनाव में जीतने के बाद कांग्रेस जिस ढंग से ग़ैर ज़िम्मेदाराना व्यवहार कर रही है. कांग्रेस के नेता और विशेष तौर पर राहुल गांधी जिस तरह से मोदी विरोध में—देश विरोधी मानसिकता से ग्रस्त दिख रहे हैं. सामाजिक समरसता को तोड़ने वाले बयान दे रहे हैं. देशद्रोही कम्युनिस्टों की लाइन पर चल रहे हैं. भारतीय समाज में अराजकता, हिंसा फैलाने जैसी बातें कर रहे हैं. ऐसा लगता है कि जैसे कम्युनिस्टों ने राहुल गांधी को हाईजैक कर लिया हो? क्या जनता ये सब नहीं देखती है? अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से लेकर, हिंदुत्व, छठी मैया आदि के विरुद्ध राहुल गांधी के अनर्गल बयान, मिथ्याप्रचार. भारतीय सेना को अपमानित करते हुए विभाजनकारी बयान देना. बात-बात में हिंदुओं को जातियों में बांटने की वकालत करना. भाषा के आधार पर विभाजन के बीज बोना. तुष्टिकरण के लिए नए वक्फ कानून के विरोध में उतरना. घुसपैठ जैसी घातक समस्या को ख़ारिज़ करना.लव जिहाद और कन्वर्जन के आतंक के विरुद्ध चुप्पी साधे रहना. मौन समर्थन देना. नेता प्रतिपक्ष की भूमिका को मज़ाक बना देना. विदेशों में जाकर भारत की सांविधानिक संस्थाओं को कटघरे में खड़ा करना. हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर आघात करना. कम्युनिस्टों की तर्ज़ पर माओ की तरह रेड बुक रखना. बार-बार संविधान का माखौल उड़ाना. आरएसएस जैसे राष्ट्रनिष्ठ संगठनों पर झूठे आक्षेप लगाना. कांग्रेस शासित राज्यों में संविधान की हत्या करते हुए प्रतिबंध लगाने का कुकृत्य करना. प्रधानमंत्री जैसे गरिमामय पद पर बैठे ओबीसी वर्ग से आने वाले - नरेंद्र मोदी जी को- तू-तड़ाक जैसी भाषा से संबोधित करना. जनता ये सब देख रही थी और ये भी गांठ बांध रही थी कि - जो व्यक्ति प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे ओबीसी वर्ग के व्यक्ति के प्रति ऐसी घ्रणा रखता है. वो आम आदमी का क्या सम्मान करेगा? क्या कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल ये भूल गए कि -जनजातीय समाज की बेटी द्रौपदी मुर्मू जी के विरुद्ध उन्होंने राष्ट्रपति का कैंडिडेट उतारा था. वो क्यों? इसीलिए न ताकि कोई जनजातीय समाज का व्यक्ति सर्वोच्च आसंदी पर न बैठ सके. विपक्ष को क्या लगता है कि देश और बिहार की जनता ये सब नहीं देख रही थी? भला, हार मिलने पर- अपने कृत्य क्यों भूल जाते हैं?

वहीं परिवारवाद के शीर्ष उदाहरण राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा और तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव— ये सब क्या ये नहीं जानते हैं कि जनता अब 'परिवारवाद' को उखाड़ फेंक चुकी है. तिस पर भ्रष्टाचारी लालू परिवार. जंगलराज के आतंक का ख़ौफ, लालू यादव की विवशता. धर्मनिष्ठ आचरण वाले तेजप्रताप यादव जैसे भाई का निष्कासन, आरजेडी पर कब्ज़ा और लालू की विवशता भरी ईसाइयत से रंगी 'हैलोवीन' पार्टी. बिहार की जनता ये सब बारीकी के साथ देख रही थी. बिहार की जनता ये जान रही थी कि कैसे तेजस्वी यादव के यहां अब ईसाईयत और मिशनरीज़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा है.

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन का विजयरथ एक बड़ी आश्वस्ति लिए हुए है. ये विजय रथ विपक्षी दलों ही नहीं अपितु भारत विरोधी वैश्विक शक्तियों को भी हर बार चित करता है. जब दुनिया भारत को कमजोर करने की साजिश रचती है. जार्ज सोरोस जैसे तमाम भारत विरोधी लोग और शक्तियां- मोदी को उखाड़ फेंकना चाहती हैं. उस समय देश के अंदर एक अदृश्य शक्ति का संचार होता है. जो संजीवनी की भांति मोदी की राजनीतिक शक्ति को और मजबूत करती है. 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद हरियाणा, महाराष्ट्र और बिहार की ये प्रचंड जीत केवल चुनावी जीत नहीं है. ये जीत केवल किसी राज्य की राजनीतिक सत्ता की जीत की तरह नहीं देखी जानी चाहिए. बल्कि इन जीतों में जो संदेश छुपा है. देश की जनता का मन और उसका भाव छिपा है. उसके निहितार्थ को भी समझने की ज़रुरत है. क्योंकि नियति ने 21 वीं सदी को भारत की सदी लिखा है. इसीलिए ये तमाम संकेत बहुत कुछ कह रहे हैं.